कहानी की कल्पना

कभी एक छोटी लड़की थी जिसे कहानियां बहुत पसंद थीं. उसे बहुत मज़ा आता था जब शब्द और चित्र उसे नई और रहस्यमयी जगहों पर ले जाते थे. कहानियों के पात्र उसके दोस्त बन जाते थे. अक्सर उसे उनसे बहुत प्रेम हो जाता था.

एक बार स्कूल की छुट्टी होने से पहले लड़की को एक एक रहस्यमयी किताब दिखी, जो ऊंचाई पर एक शेल्फ पर रखी थी.

"वो कौन सी किताब है?" उसने अपनी टीचर से पूछा.

"वो कहानियों की जादुई किताब है," टीचर ने जवाब दिया.

"वो किताब मेरी दादी ने मुझे भेंट की थी जब मैं तुम्हारी उम्र की थी. क्या तुम उसे एक रात के लिए घर ले जाना चाहोगी?"

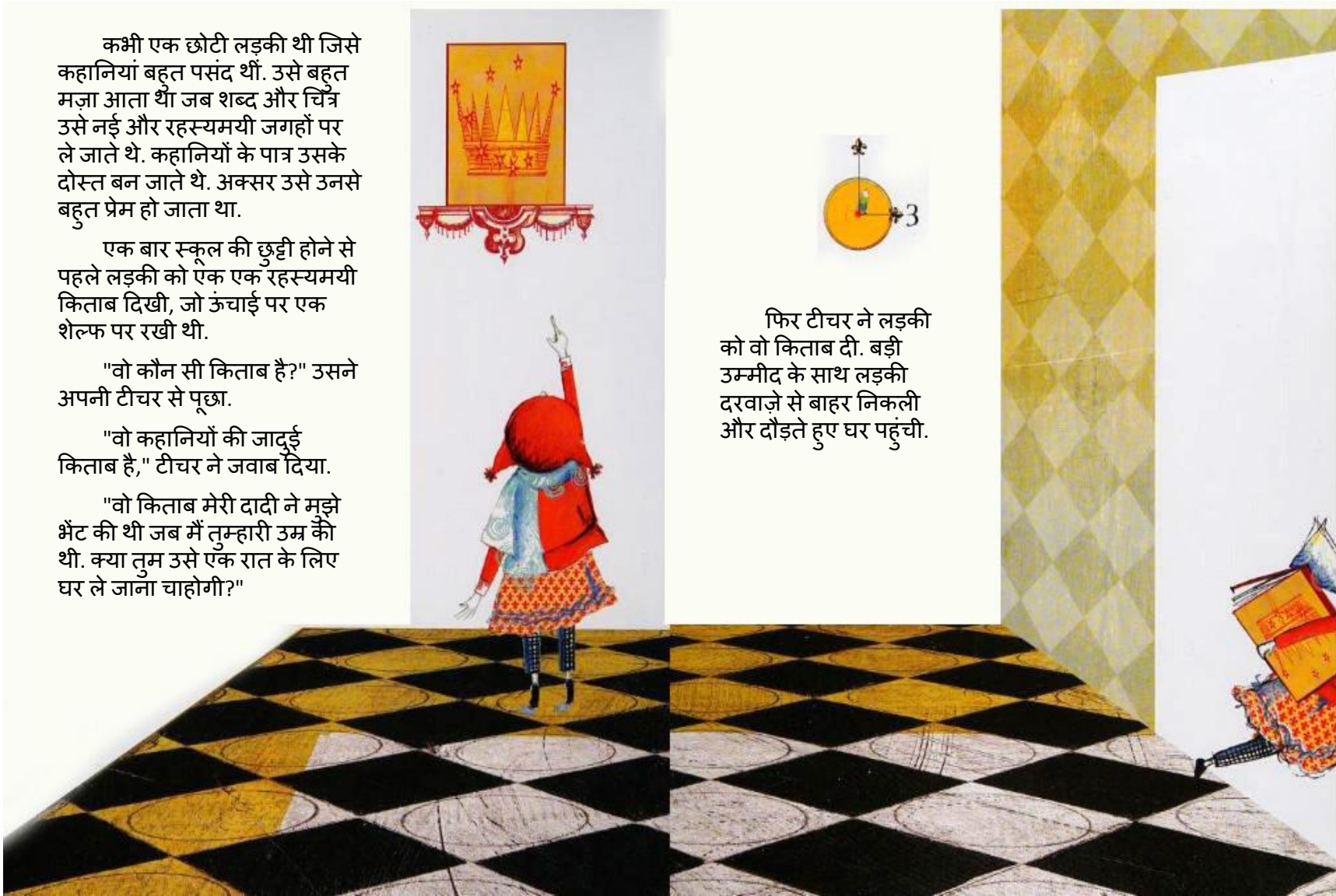

फिर टीचर ने लड़की को वो किताब दी. बड़ी उम्मीद के साथ लड़की दरवाज़े से बाहर निकली और दौड़ते हुए घर पहुंची.

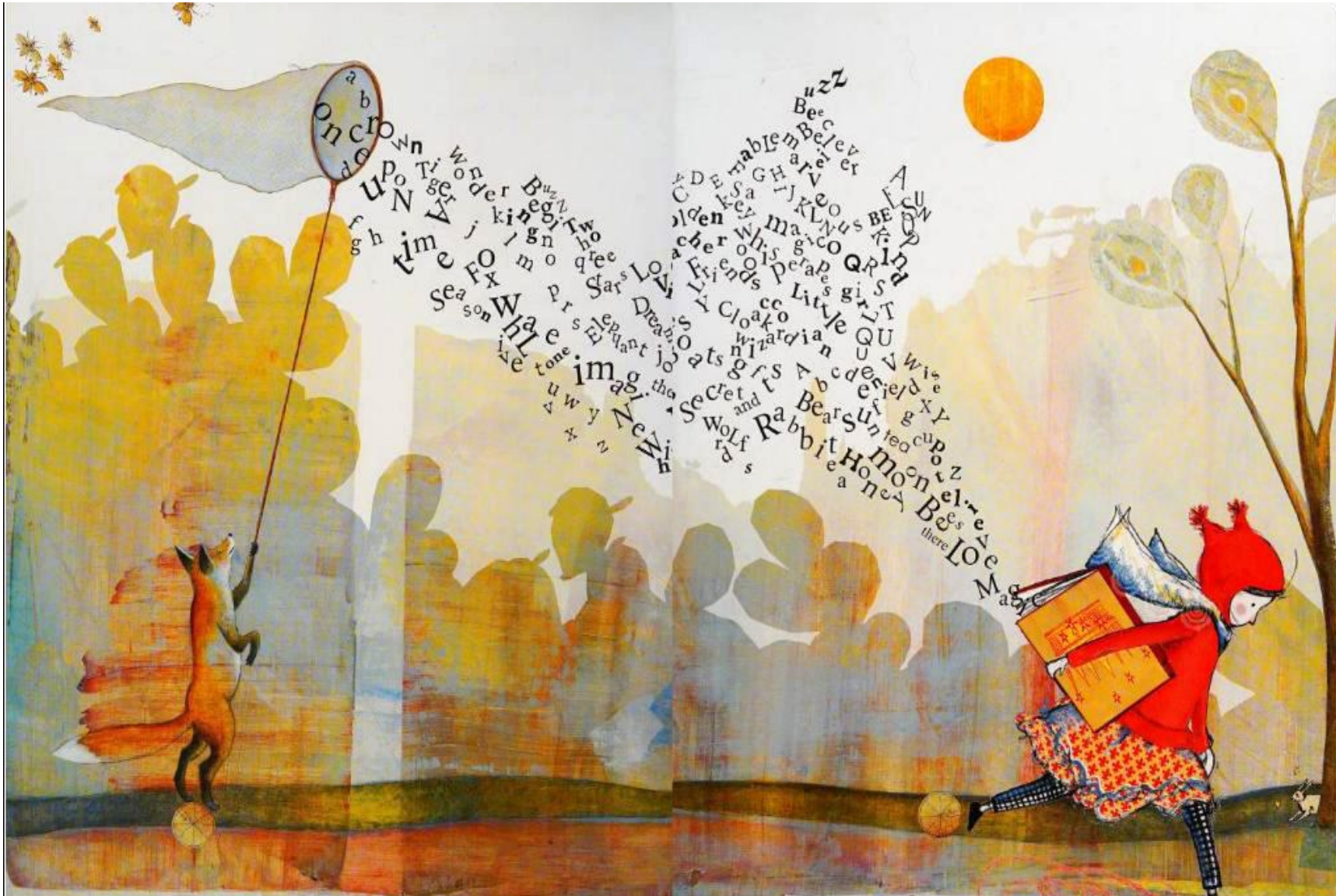
Once upon a time
Fox
Whale
imagine
Bear
Rabbit
Honey
Bees
there
Little
Cloak
Wizard
Secret
Wolf
Tiger
Buzz
Beetle
Marvelous
magic
Friends
Dream
Stars
Season
Love
Bears
tea
cup
Pot
Mad

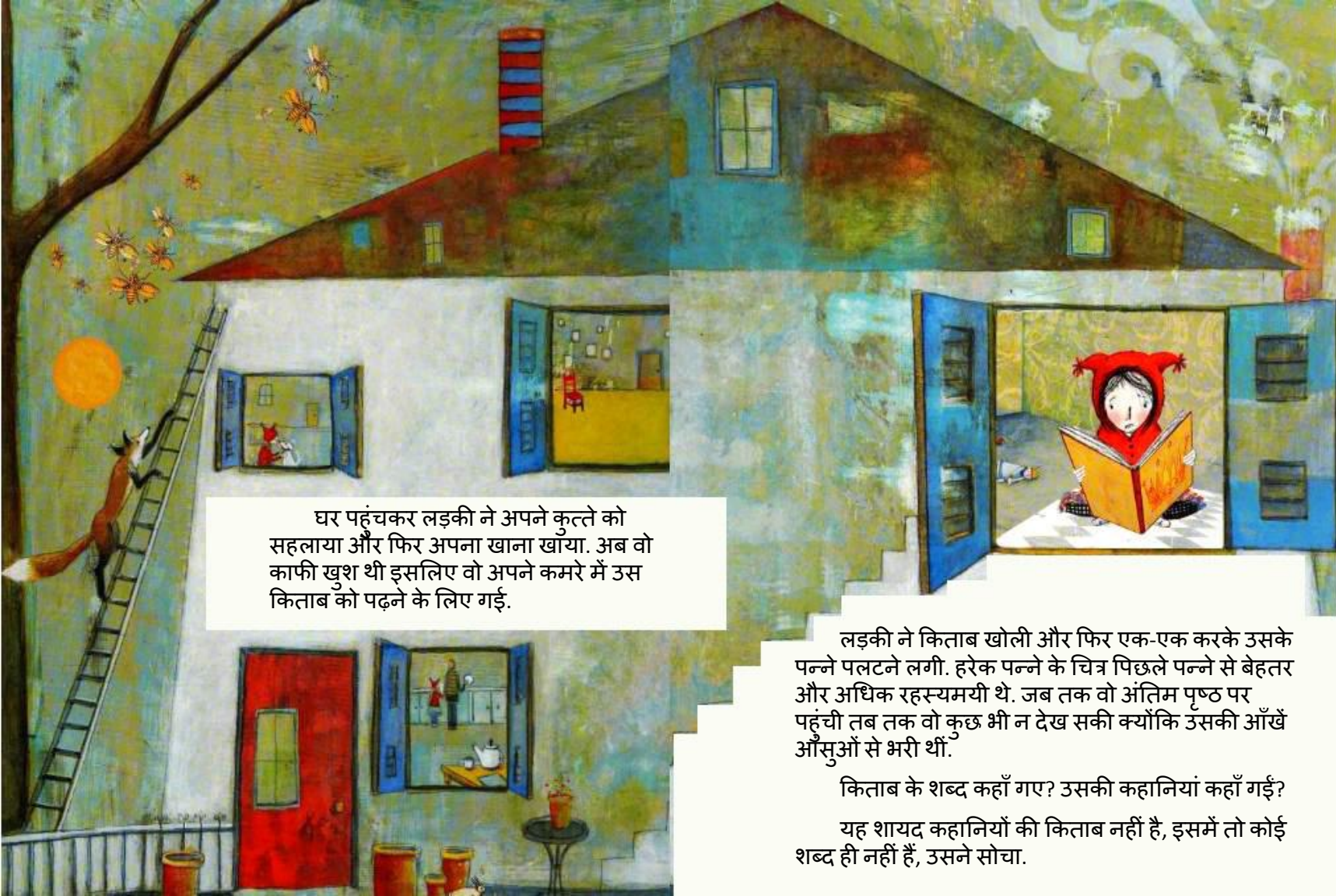

घर पहुंचकर लड़की ने अपने कुत्ते को सहलाया और फिर अपना खाना खाया. अब वो काफी खुश थी इसलिए वो अपने कमरे में उस किताब को पढ़ने के लिए गई.

लड़की ने किताब खोली और फिर एक-एक करके उसके पन्ने पलटने लगी. हरेक पन्ने के चित्र पिछले पन्ने से बेहतर और अधिक रहस्यमयी थे. जब तक वो अंतिम पृष्ठ पर पहुंची तब तक वो कुछ भी न देख सकी क्योंकि उसकी आँखें आँसुओं से भरी थीं.

किताब के शब्द कहाँ गए? उसकी कहानियां कहाँ गईं?

यह शायद कहानियों की किताब नहीं है, इसमें तो कोई शब्द ही नहीं हैं, उसने सोचा.

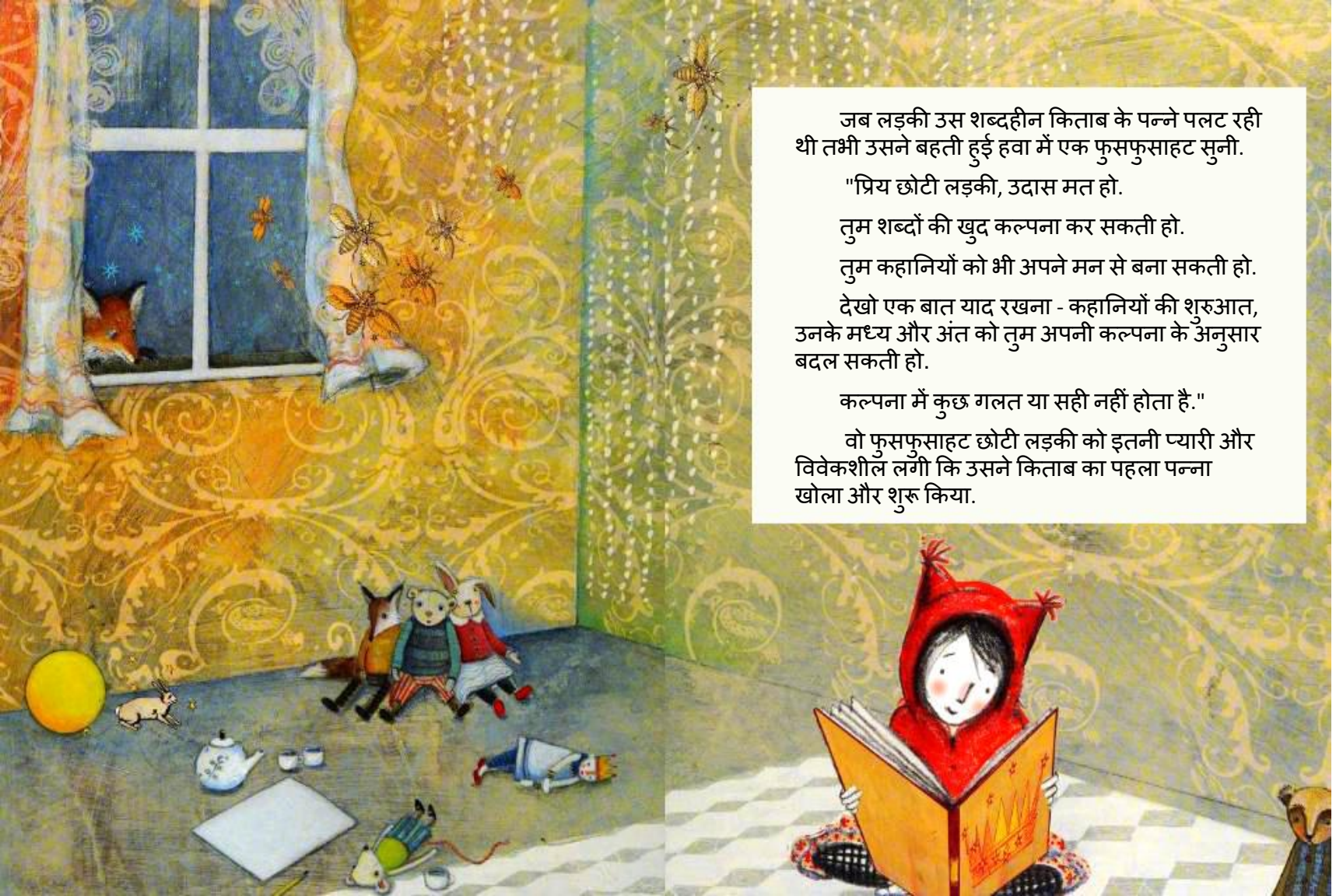

जब लड़की उस शब्दहीन किताब के पन्ने पलट रही थी तभी उसने बहती हुई हवा में एक फुसफुसाहट सुनी.

"प्रिय छोटी लड़की, उदास मत हो.

तुम शब्दों की खुद कल्पना कर सकती हो.

तुम कहानियों को भी अपने मन से बना सकती हो.

देखो एक बात याद रखना - कहानियों की शुरुआत, उनके मध्य और अंत को तुम अपनी कल्पना के अनुसार बदल सकती हो.

कल्पना में कुछ गलत या सही नहीं होता है."

वो फुसफुसाहट छोटी लड़की को इतनी प्यारी और विवेकशील लगी कि उसने किताब का पहला पन्ना खोला और शुरू किया.

शुरू में उसे किसी कहानी की कल्पना करना मुश्किल लगी इसलिए उसने चित्र को बड़े गौर से देखा. क्या वो भालू उसके दोस्त हैं, उसने अचरज किया. शायद वो नीला भालू शहद ला रहा हो? क्योंकि भालुओं को शहद बेहद पसंद है.

"नीले भालू की यात्रा" शायद यह शीर्षक ठीक होगा. फिर वो लड़की खुद को एक कहानी सुनाने लगी! नीला भालू वसंत शुरू होने के पहले दिन आएगा, उसने वादा किया.....

फिर छोटी लड़की ने दूसरे चित्र को गौर से देखा. अरे वहां एक छोटा खरगोश भी है, उसने सोचा. पता नहीं वो आदमी उस सुन्दर बैल से क्या कह रहा है? मुझे पता है...

"वो रहस्य" "श्रीमान बैल, आप यह रहस्य किसी को न बताएं, पर हमें आपकी मदद की ज़रुरत होगी, अगले हफ्ते....

फिर उस लड़की की ज़ुबान पर शब्द आसानी से आने लगे. फिर शब्दों के वाक्य बनने लगे, और वाक्यों की कहानियां बनने लगीं. "तलाश" में अपनी सौ मील लंबी यात्रा उन्होंने एक लकड़ी की मज़बूत नाव में शुरू की.

"हम वहां कब पहुंचेंगे?" खरगोश ने पूछा. "हमें दो दिन और एक रात और लगेगी," शेर ने उत्तर दिया. "अरे यह तो बहुत लम्बा समय है. मैं भूल गया था, कृपा मुझे दुबारा बताएं, कि हम लोग कहाँ जा रहे हैं?" खरगोश ने पूछा.

"बाघ की प्रार्थना" दूर और पास के जंगलों के सभी जानवर वहां आएंगे और उसकी तैयारियां चल रही हैं. नुकीली टोपी वाला जोकर, वहां अपने अकॉर्डियन पर संगीत बजायेगा.

हवा का घोड़ा छल्लों में से कूदेगा. दोपहर ठीक बारह बजे सभी को चाय दी जाएगी. फिर बाघ कोई महत्वपूर्ण घोषणा करेगा.....

"जन्मदिन की पार्टी" जैसा हमसे कहा गया था हम ठीक 3.33 को वहां पहुंचे. चार पत्तों वाली क्लोवर और एक बड़े बर्तन में गर्म चाय को जंगल के दरवाज़े पर रखा गया था. उल्लू हमारे बाएं पेड़ पर बैठा था उसने पूछा, "कौन? कौन?". फिर हमने उसे सीक्रेट पासवर्ड बताया. हमारा काम जन्मदिन का केक लाना था जिस पर वनीला क्रीम की आईसिंग थी और ऊपर से छह मोमबत्तियां चिपकी थीं. पैम आगे क्या कहेगा उसका किसी को भी ठीक तरह से नहीं पता था. पर उसने आग्रह करके "जन्मदिन की पार्टी" आयोजित की.....

"जादुई चोगा" एक रात एक रहस्यमयी आदमी, रेशम का चोगा पहनकर हमारे तट पर नाव में आया. हमें जल्द ही पता चल गया कि वो कोई जादूगर था क्योंकि वो असली चीज़ों के आकार के बुलबुले बनाता था. सबसे अजीब बात यह थी कि बुलबुले छोड़े जाने के बाद मैं असली चीज़ें बन जाते थे.

जल्द ही विशाल सफ़ेद शार्कें हमारे तट के शांत पानी में घूम रही थीं. उन्हें देखकर हमें बड़ा अचरज हो रहा था, पर हमें जल्दी कुछ करना भी था.....

"सुनहरी चाभी" उस दिन सुबह को उल्लू ने हमसे कहा कि वो मध्य रात को हमें ले जाएगा. हमें समय का ध्यान रखकर किसी भी परिस्थिति का सामना करने के लिए तैयार रहना होगा. उसने अपनी चोंच में एक सोने की चाभी पकड़ी थी.

फिर हम गहरे नीले रात के आसमान की ओर उड़े. हम किसी भी हालात का सामना करने को तैयार थे.....

शब्द-दर-शब्द करके उस छोटी लड़की ने हरेक पन्ने के चित्रों में छिपी कहानी की कल्पना की. और जब पूरा चन्द्रमा आसमान में ऊपर चढ़ा और चमका तब तक लड़की को नींद आ गई और वो सपनों की दुनिया में खो गई थी. वो चित्रों में छिपी कहानियों के सपने देख रही थी.

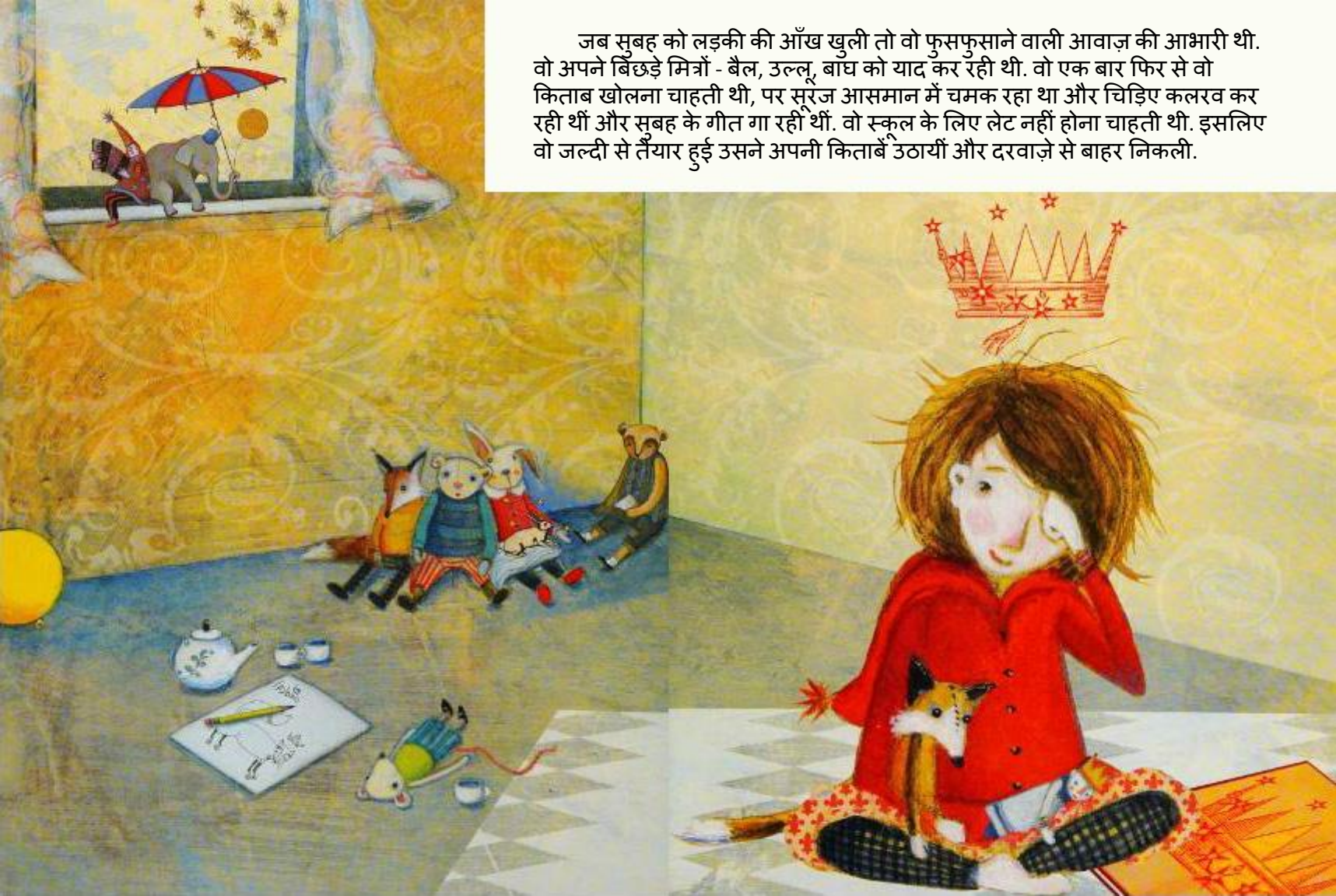

जब सुबह को लड़की की आँख खुली तो वो फुसफुसाने वाली आवाज़ की आभारी थी. वो अपने बिछड़े मित्रों - बैल, उल्लू, बाघ को याद कर रही थी. वो एक बार फिर से वो किताब खोलना चाहती थी, पर सूरज आसमान में चमक रहा था और चिड़िए कलरव कर रही थीं और सुबह के गीत गा रही थीं. वो स्कूल के लिए लेट नहीं होना चाहती थी. इसलिए वो जल्दी से तैयार हुई उसने अपनी किताबें उठायीं और दरवाज़े से बाहर निकली.

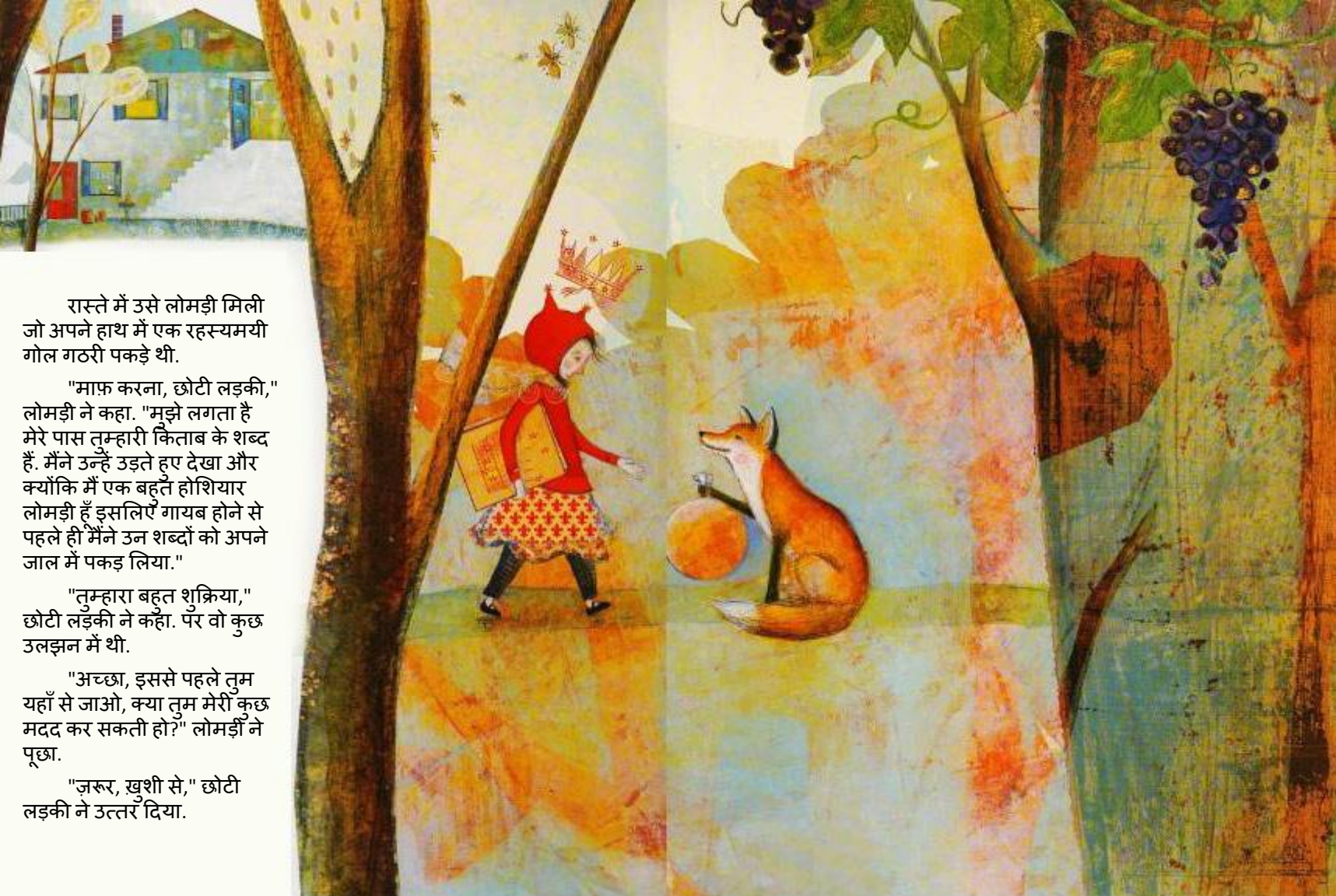

रास्ते में उसे लोमड़ी मिली जो अपने हाथ में एक रहस्यमयी गोल गठरी पकड़े थी.

"माफ़ करना, छोटी लड़की," लोमड़ी ने कहा. "मुझे लगता है मेरे पास तुम्हारी किताब के शब्द हैं. मैंने उन्हें उड़ते हुए देखा और क्योंकि मैं एक बहुत होशियार लोमड़ी हूँ इसलिए गायब होने से पहले ही मैंने उन शब्दों को अपने जाल में पकड़ लिया."

"तुम्हारा बहुत शुक्रिया," छोटी लड़की ने कहा. पर वो कुछ उलझन में थी.

"अच्छा, इससे पहले तुम यहाँ से जाओ, क्या तुम मेरी कुछ मदद कर सकती हो?" लोमड़ी ने पूछा.

"ज़रूर, ख़ुशी से," छोटी लड़की ने उत्तर दिया.

लोमड़ी ने छोटी लड़की का शुक्रिया अदा किया और छोटी लड़की ने लोमड़ी से धन्यवाद कहा. फिर लड़की ने शब्दों की पोटली उठाई और वो स्कूल की ओर चली.

"मैं देरी के लिए माफ़ी चाहती हूँ!" छोटी लड़की ने हांफते हुए कहा.

"मुझे एक फुसफुसाहट सुनाई दी और फिर मैंने हरेक चित्र के लिए एक कहानी की कल्पना की. फिर मैं सुबह देरी तक सोई, मुझे यह भी पता नहीं चला कि सारे शब्द गिर गए थे पर होशियार लोमड़ी ने उन्हें अपने जाल में पकड़ लिया. पर मुझे आपके दी हुई किताब बेहद पसंद आई. माफ़ करें, मैं आपका शुक्रिया अदा करना भूल गई! अब मुझे आपको कई कहानियां सुनानी हैं."

"मैं उन कहानियों को सुनने का इंतज़ार नहीं कर सकती हूँ," टीचर ने मुस्कुराते हुए कहा.

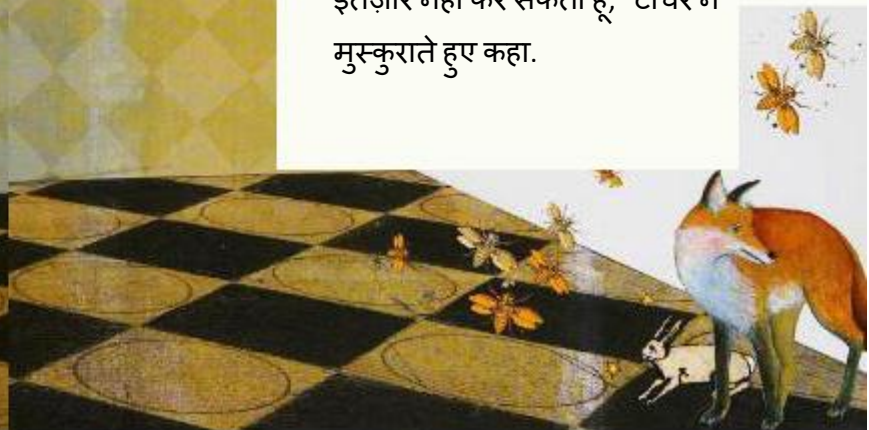

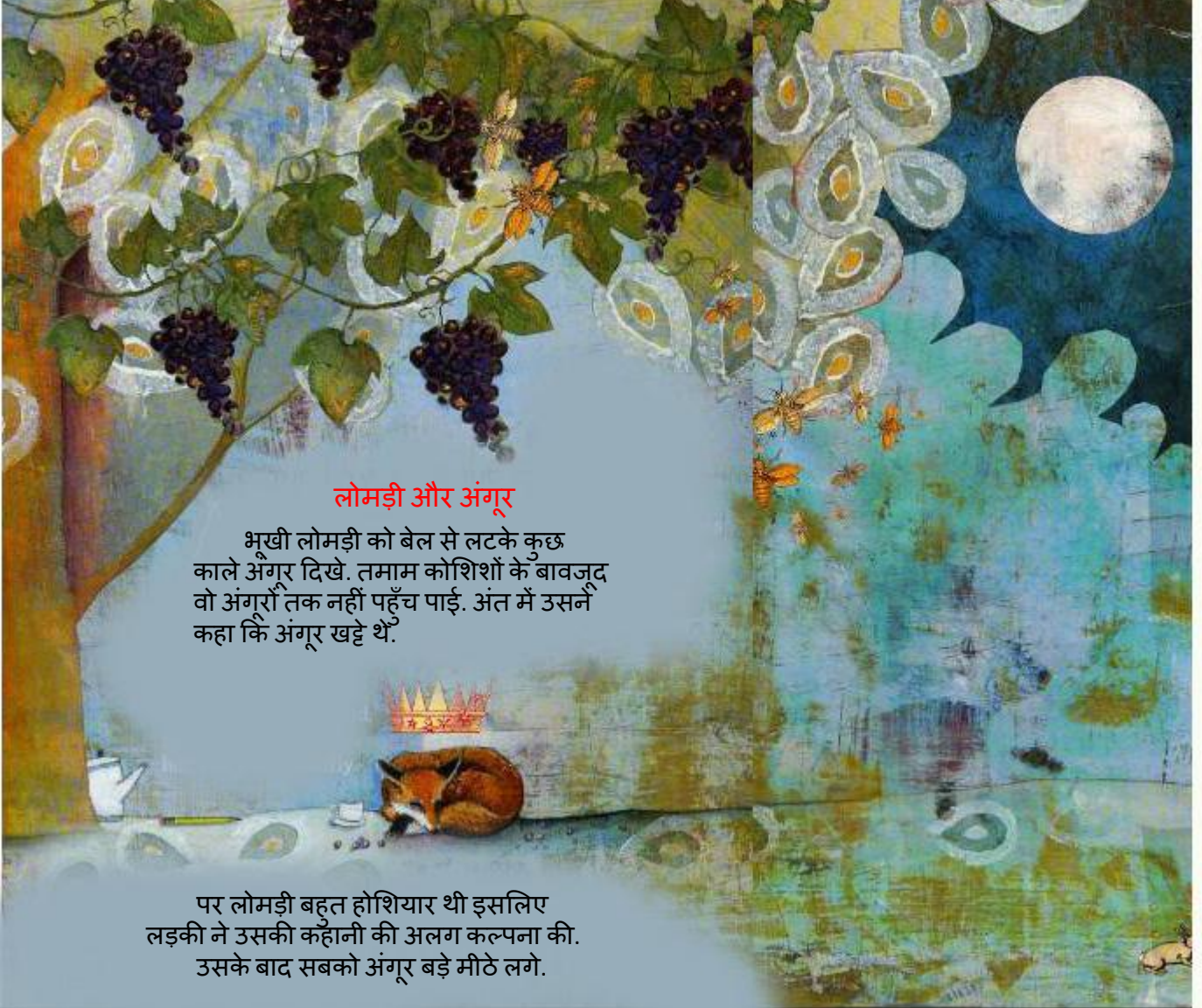

लोमड़ी और अंगूर

भूखी लोमड़ी को बेल से लटके कुछ
काले अंगूर दिखे. तमाम कोशिशों के बावजूद
वो अंगूरों तक नहीं पहुँच पाई. अंत में उसने
कहा कि अंगूर खट्टे थे.

पर लोमड़ी बहुत होशियार थी इसलिए
लड़की ने उसकी कहानी की अलग कल्पना की.
उसके बाद सबको अंगूर बड़े मीठे लगे.